P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-4*(Part-2) December- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

राजकीय विशिष्ट माध्यमिक विद्यालय : एक वैयक्तिक अध्ययन

सूरज पाल सिंह भाटी
सहायक प्रोफेसर,
शिक्षा संकाय,
महिला टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेज,
जोधपुर, राजस्थान, भारत

सारांश

शिक्षा का उद्देश्य बालक का सर्वांगीण विकास करना हैं, जिससे बालक तेजस्वी, बुद्धिमान, चरित्रवान, विद्वान तथा वीर बनता हैं। इन क्षमताओं का प्रकटीकरण एवं विकास तभी संभव है जबकि अन्तर्निहित शक्तियों के विकास के लिए बालक को उचित अवसर मिलें। अतः इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए विद्यालय का महत्वपूर्ण स्थान हैं। आज के आधुनिक और वैज्ञानिक युग में ज्ञान का महत्व बढ़ता जा रहा हैं। बालक, अध्यापक, विद्यालय तथा अभिभावक की सन्तुष्टि अच्छे परिणामों पर निर्भर करती हैं। विद्यालय परिणामों की निर्भरता न केवल विद्यार्थियों के शैक्षिक पक्षों अपितु अन्य पक्षों जिसमें सहशैक्षिक एवं भौंतिक पक्ष, घर–परिवार, शाला वातावरण, शिक्षक, छात्र एवं प्रधानाध्याक का भी प्रभाव पड़ता हैं। अतः विद्यालय में विशेषताएँ देखी जाने लगी हैं। सरकार द्वारा समय–समय पर विभिन्न उपबन्धों तथा नीतियों द्वारा कई अभिकरणों की स्थापना की जाती हैं। इसी दृष्टि से शिक्षा के क्षेत्र में सन् 1957 में राजस्थान सरकार द्वारा राजस्थान राज्य में 8 विशिष्ट पूर्व प्राथमिक विद्यालयों की स्थापना की गई थी, जो क्रमोन्नत होने के पश्चात् वर्तमान में 6 विशिष्ट उच्च प्राथमिक तथा 2 माध्यमिक विद्यालय के रूप में संचालित हैं। राज्य में विशिष्ट विद्यालय अजमेर, बागदड़ा, बीकानेर, कोटा, सिरोही, जोधपुर, जयपुर एवं उदयपुर में हैं। जैसा कि नाम से ही स्पष्ट होता हैं कि यह विद्यालय सामान्य विद्यालयों से विशिष्ट प्रतीत होते हैं, और इनकी स्थापना के उद्देश्य भी विशिष्ट रहे हैं। शिक्षा के क्षेत्र में लगातार इस प्रकार के नवाचारों की आवश्यकता प्रतीत होती हैं। इस शोध के उद्देश्य– विशिष्ट विद्यालय की विशिष्ट पृष्ठभूमि का अध्ययन करना, विशिष्ट विद्यालय के भौतिक एवं मानवीय संसाधनों का पता लगाना, विशिष्ट विद्यालय की शैक्षिक, सह–शैक्षिक गतिविधियों तथा पाठ्यक्रम का अध्ययन करना, विशिष्ट विद्यालय की प्रबन्ध व प्रशासन व्यवस्था का अध्ययन करना तथा विशिष्ट विद्यालय द्वारा शिक्षा को गुणात्मक बनाने हेतु नवाचारों/प्रयोगों का पता लगाना। प्रस्तुत शोध के गहन अध्ययन करने हेतु वैयक्तिक अध्ययन विधि का चयन किया गया है। शोधकर्ता द्वारा शोधकार्य को पूर्ण करने के लिए प्रयोजनामूलक न्यादर्श प्रतिचयन के द्वारा उदयपुर शहर में स्थित राजकीय विशिष्ट माध्यमिक विद्यालय का चयन किया। शोधकर्ता द्वारा प्रस्तुत अध्ययन में यादृच्छिक प्रतिचयन विधि के द्वारा विद्यालय के अध्यापकों एवं उद्देश्यपूर्ण प्रतिचयन विधि के द्वारा जिला शिक्षा अधिकारी(माध्यमिक), प्रधानाध्यापक, विद्यार्थियों (प्राथमिक स्तर एवं उच्च प्राथमिक तथा माध्यमिक स्तर) का चयन किया गया। शोध के निष्कर्ष दर्शाते है कि राजकीय विशिष्ट माध्यमिक विद्यालय अपनी विशिष्ट गुणवत्ता लिए हुए है, यह अन्य सरकारी विद्यालयों से बिल्कुल अलग है। चूंकि अन्य सरकारी विद्यालयों में इस प्रकार की शिक्षा एवं व्यवस्था देखने को नहीं मिलती है, विशिष्ट विद्यालय में विद्यार्थियों की संतुष्टि गुणवत्ता को दर्शाती है तथा विशिष्ट विद्यालय में कार्यरत अध्यापकों की उच्चतम योग्यता भी विशिष्ट विद्यालय की गुणवत्ता को प्रकट करती है। विशिष्ट विद्यालय में प्रतियोगिताओं का आयोजन करना तथा इससे विद्यार्थियों में आए परिवर्तन को प्रस्तुत करना विशिष्ट विद्यालय का एक अत्यन्त रोचक कार्य है। विशिष्ट विद्यालय में पिछले पाँच वर्षों से लगातार सभी कक्षाओं का शत् प्रतिशत परीक्षा परीणाम प्राप्त करना भी विशिष्ट विद्यालय की उच्च उपलब्धि को दर्शाता है। जो विशिष्ट विद्यालय के प्राचार्य एवं अध्यापकों की योग्यता को प्रकट करता है।

मुख्य शब्द : विशिष्ट विद्यालय, वैयक्तिक अध्ययन, नवाचार, राजकीय विद्यालय, केस स्टडी, विद्यालय की विशेषताएँ।

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-4*(Part-2) December- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

प्रस्तावना

"व्यक्ति के जन्म से प्राप्त शक्तियों का स्वाभाविक समरस एवं प्रगतिशील विकास ही शिक्षा हैं।"

"Education is a natural harmonious and progressive development of man's innate powers."

पेस्तालॉजी

समय और परिस्थितियों में परिवर्तन के साथ–साथ सामाजिक संरचना में भी परिवर्तन दिखाई दे रहा हैं, लेकिन हमें यह समझना होगा कि जनतन्त्र का मुख्य दायित्व ऐसी सामाजिक संरचना को स्थापित करना हैं, जिसमें प्रत्येक व्यक्ति को साद्देश्य जीवनयापन के पूरे अवसर प्राप्त हो सकें। इनके लिए अपेक्षित मूल्यों के विवेक और उस पर आधारित उद्देश्य निश्चित करने होंगे और फिर उनकी उपलब्धि के लिए निरन्तर प्रयास करने की आवश्यकता होंगी।

शिक्षा का उद्देश्य बालक का सर्वांगीण विकास करना हैं, जिससे बालक तेजस्वी, बुद्धिमान, चरित्रवान, विद्वान तथा वीर बनता हैं। इन क्षमताओं का प्रकटीकरण एवं विकास तभी संभव है जबकि अन्तर्निहित शक्तियों के विकास के लिए बालक को उचित अवसर मिलें। अतः इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए विद्यालय का महत्वपूर्ण स्थान हैं।

विद्यार्थीं एवं अभिभावक की सदैव यह इच्छा रहती हैं कि उनके बच्चे शैक्षिक उपलब्धि की सीढ़ी पर अधिक से अधिक उच्च स्तर प्राप्त करें। शैक्षिक उपलब्धि की प्राप्ति की अभिलाषा बालक तथा माता–पिता दोनों पर ही दबाव डालती हैं। यह दबाव केवल माता–पिता तक ही सीमित नही रहता, बल्कि प्राचार्य, अध्यापक, विद्यालय यहाँ तक की शैक्षिक व्यवस्था पर भी स्पष्ट रूप से नजर आती हैं। ऐसा प्रतीत होता हैं कि शिक्षा की सम्पूर्ण व्यवस्था ही शैक्षिक निष्पत्ति के चारों ओर केन्द्रित हैं।

आज के आधुनिक और वैज्ञानिक युग में ज्ञान का महत्व बढ़ता जा रहा हैं। बालक, अध्यापक, विद्यालय तथा अभिभावक की सन्तुष्टि अच्छे परिणामों पर निर्भर करती हैं। विद्यालय परिणामों की निर्भरता न केवल विद्यार्थियों के शैक्षिक पक्षों अपितु अन्य पक्षों जिसमें सहशैक्षिक एवं भौंतिक पक्ष, घर–परिवार, पाठशाला वातावरण, शिक्षक, छात्र एवं प्रधानाध्याक का भी प्रभाव पड़ता हैं। अतः विद्यालय में विशेषताएँ देखी जाने लगी हैं।

सम्पूर्ण शैक्षिक ढाँचा बालको के सर्वांगीण विकास की दृष्टि से आवश्यक प्रतीत होता है, इसमें से माध्यमिक शिक्षा राष्ट्र की शक्ति को वांछित दिशा प्रदान करती हैं। इस देश की सरकार माध्यमिक शिक्षा को बेहतर बनाने की ओर जागृत रही हैं, इसलिये समय–समय पर आयोग तथा समितियों का गठन होता रहा हैं। माध्यमिक शिक्षा सम्पूर्ण शैक्षिक कार्यक्रम की रीढ़ हैं। शरीर रचना में जो महत्व रीढ़ की हड्डी का हैं, वही स्थान माध्यमिक शिक्षा का देश के अर्थ तन्त्र में हैं। इसलिये आज के विकासशील विज्ञान और तकनीकी के युग में और वैश्वीकरण, निजीकरण, उदारीकरण ओर सुस्थिर विकास के साथ माध्यमिक शिक्षा का विकास किया जाना अवश्यम्भावी हो गया है।

टी. रेमॉण्ट के शब्दों में, "शिक्षा विकास का वह क्रम हैं, जिससे व्यक्ति अपने को धीरे–धीरे विभिन्न प्रकार से अपने भौतिक, सामाजिक और आध्यात्मिक वातावरण के अनूकूल बना लेता हैं।"

शिक्षा के विभिन्न स्तरों में विशिष्टताएँ एवं विस्तारता लाने का भरसक प्रयास किया जाता रहा है। विशिष्ट बदलावों के मद्देनजर विशिष्ट शिक्षा और शैक्षिक व्यवस्था को बनाने का प्रमुख उद्देश्य रखा जा रहा है।

सरकार द्वारा समय–समय पर विभिन्न उपबन्धों तथा नीतियों द्वारा कई अभिकरणों की स्थापना की जाती हैं। इसी दृष्टि से शिक्षा के क्षेत्र में सन् 1957 में राजस्थान सरकार द्वारा 8 विशिष्ट पूर्व प्राथमिक विद्यालयों की स्थापना की गयी थी, जो क्रमोन्नत होने के पश्चात् वर्तमान में 6 विशिष्ट उच्च प्राथमिक तथा 2 माध्यमिक विद्यालय के रूप में संचालित हैं। राज्य में विशिष्ट विद्यालय अजमेर, बागदड़ा, बीकानेर, कोटा, सिरोही, जोधपुर, जयपुर एवं उदयपुर में हैं। जैसा की नाम से ही स्पष्ट होता हैं कि यह विद्यालय सामान्य विद्यालयों से विशिष्ट प्रतीत होते हैं, और इनकी स्थापना के उद्देश्य भी विशिष्ट ही रहे होंगे। वस्तुतः यह विद्यालय बालिका विद्यालय है, लेकिन इसकी स्थिति विद्यालय के नाम से स्पष्ट नही हो पाती है। शिक्षा के क्षेत्र में लगातार इस प्रकार के नवाचारों की आवश्यकता प्रतीत होती हैं। अतः आवश्यकता इस बात कि है कि इस प्रकार के संस्थानों की शिक्षा के प्रति गुणात्मकता और प्रतिबद्धता को देखा जाए। अतः शोधकर्ता के मन में उन कारको का पता लगाने की जिज्ञासा उत्पन्न हुई जिनको ध्यान में रखते हुए ये विशिष्ट विद्यालय सरकार द्वारा स्थापित किये गये। इस जिज्ञासावश शोध हेतु विशिष्ट विद्यालय का चयन किया गया।

साहित्यावलोकन

राव, विरेन्द्रसिंह (2013) ने *''बाँसवाड़ा जिले के डॉ. भीमराव अम्बेडकर बालिका आवासीय विद्यालय का केस अध्ययन''.* विषय पर मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर से शोध कार्य किया।

इस शोध के प्रमुख उद्देश्यों में डॉ. भीमराव अम्बेडकर बालिका आवासीय विद्यालय की स्थापना के उद्देश्य का अध्ययन करना, निर्धारित उद्देश्यों की प्राप्ति की वस्तु स्थिति का अध्ययन करना, डॉ. भीम राव अम्बेडकर बालिका आवासीय विद्यालय की भौतिक, वित्त, प्रशासनिक, शैक्षिक एवं सह–शैक्षिक व्यवस्था का अध्ययन करना, डॉ. भीमराव अम्बेडकर बालिका आवासीय की सहशैक्षिक उपलब्धियों का अध्ययन करना। शोध विधि के रूप में वैयक्तिक अध्ययन विधि एवं उपकरण के रूप में प्रश्नावली एवं साक्षात्कार अनुसूची का प्रयोग किया गया। शोध निष्कर्ष में पाया गया कि विद्यालय का भौतिक स्वरूप उच्च स्तरीय है एवं विद्यालय सभी भौतिक व्यवस्थाओं से परिपूर्ण है, विद्यालय का परीक्षा परिणाम उच्च कोटी का रहता हैं, अध्यापकों द्वारा अध्यापन में शिक्षण सहायक सामग्री का उपयोग किया जाता है तथा प्रबन्धकीय कार्य से कर्मचारी सन्तुष्ट हैं।

कच्छवाह,पंकज(2013) ने *''सुचेता कृपलानी विकलांग आवासीय विद्यालय : एक वैयक्तिक अध्ययन''*.विषय पर मोहन लाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर से शोधकार्य किया।

इस शोध के उद्देश्यों में विद्यालय की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का अध्ययन करना, विद्यालय द्वारा प्राथमिक शिक्षा, माध्यमिक शिक्षा तथा उच्च माध्यमिक शिक्षा हेतु चलाए जाते है। विभिन्न कार्यक्रमों एवं गतिविधियों का अध्ययन करना, विद्यालय द्वारा प्राथमिक शिक्षा से उच्च माध्यमिक शिक्षा तक के क्षेत्र में आने वाली कठिनाइयों का अध्ययन करना,विद्यालय द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में भावी योजनाओं का पता लगाना तथा शिक्षा हेतु संचालित कार्यक्रमों एवं गतिविधियों से सम्बन्धित जानकारी प्राप्त करना। शोध विधि के रूप में वैयक्तिक अध्ययन विधि एवं उपकरण के रूप में दस्तावेज एकत्री करण प्रपत्र, साक्षात्कार अनुसूची, प्रश्नावली एवं अवलोकन प्रपत्र का प्रयोग किया गया। शोध निष्कर्ष में यह पाया गया कि सुचेता कृपलानी शिक्षा निकेतन द्वारा प्राकृतिक संसाधनों का विकास, विकलांग शिक्षा, स्वास्थ्य इत्यादि पर विभिन्न प्रकार के कार्यक्रम एवं गति विधियाँ संचालित की जाती है। पांच वर्षों के परीक्षा परिणाम के आधार पर कहा जा सकता है, कि आवासीय विद्यालय का शैक्षिक वातावरण अति उच्च स्तर का है। आवासीय विद्यालय में विद्यार्थियों की संतुष्टि तथा कार्यरत अध्यापकों की उच्चतम योग्यता आवासीय विद्यालय की गुणवत्ता को प्रकट करती है। संस्थान की भावी योजनाओं में निःशक्त विद्यार्थियों को शिक्षा प्रदान कर उनको अपने पैरो पर खड़ा करना हैं।

Keck-centeno, Julie Shannon (2008).***"The Path of School Improvement : A Case Study of an Urban Elementary School".*** Ph.D. research at University of California, Las Angeles.

इस शोधकार्य के अध्ययन का उद्देश्य शहर में स्थित प्राथमिक विद्यालय की 1995–2007 तक 12 वर्ष की अवधि में विद्यालय में सुधार के संबंध में किए गए प्रयासों के बारे में जानना था। शोध विधि के रूप में सर्वेक्षण एवं वैयक्तिक अध्ययन विधि एवं उपकरण के रूप में विद्यालय रिकार्ड का अवलोकन एवं साक्षात्कार अनुसूची का प्रयोग किया गया। इस अध्ययन में गुणात्मक तरीकों का प्रयोग करते हुए तीन मुख्य बिन्दुओं पर ध्यान केन्द्रित किया गया– (1) विद्यालय संगठन (2) अनुदेशन तथा (3) अध्यापकों की अभिवृत्ति, धारणाएँ तथा व्यवहार। अध्ययन के निष्कर्ष बताते है कि अध्यापकों के द्वारा सहयोग की भावना तथा सामंजस्य में वृद्धि हुई है, इस वृद्धि का कारण विद्यार्थियों के विभिन्न कार्य कलापों का अध्ययन, साथ मिलकर पाठ्य योजना बनाना तथा उसका क्रियान्वयन प्रमुख है। तथ्यों से ज्ञात होता है कि अध्यापकों में स्व उच्चस्तरीय प्रभाविता तथा समूह प्रभाविता के कारण विद्यार्थियों की प्रवृत्ति बढ़ी। इस प्रकार प्राचार्य तथा अध्यापकों के अनुभव, व्यावसायिक निपुणता तथा साथ मिल कर कार्य करने की भावना द्वारा सभी प्रकार की चुनौतियों का सामना किया जिससे विद्यालय में सतत् सुधार सम्भव हो सका।

गुर्जर, प्रेमचन्द (2008) ने *''कस्तूरबा गाँधी विद्यालयों का अध्ययन''*. विषय पर मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर से शोध कार्य किया।

शोध के उद्देश्यों में कस्तूरबा गाँधी बालिका आवासीय विद्यालय के संगठन, प्रशासन, आयोजन एवं पर्यवेक्षण का अध्ययन करना, कस्तूरबा गाँधी बालिका आवासीय विद्यालय के भौतिक संसाधनों का पता लगाना, कस्तूरबा गाँधी बालिका आवासीय विद्यालय में छात्राओं को दी जाने वाली सुविधाओं का पता लगाना, कस्तूरबा गाँधी बालिका आवासीय विद्यालय की शैक्षिक एवं सहशैक्षिक गतिविधियों का पता लगाना, कस्तूरबा गाँधी बालिका आवासीय विद्यालयों में छात्राओं को दी जाने वाले शैक्षिक अवसरों एवं उनके उपयोग का पता लगाना कस्तूरबा गाँधी बालिका आवासीय विद्यालय की बालिकाओं एवं अध्यापिकाओं की समस्याओं का पता लगाना था। शोध विधि के रूप में सर्वेक्षण विधि एवं उपकरण के रूप में प्रश्नावली एवं साक्षात्कार अनुसूची प्रयोग किया गया। शोध निष्कर्ष में पाया गया कि कस्तूरबा गाँधी बालिका विद्यालय अभी प्रारंभिक अवस्था में है, इसकी कई समस्याएँ है, जिसका प्रशासन को सामना करना पड़ रहा हैं, सचिव स्तर पर अधिकारी समस्त गतिविधियाँ संचालित करता हैं, जिला स्तर पर जिलाधीश को जिम्मेदारी सौंपी गई हैं, स्टाफ योग्य व अनुभवी नहीं है एवं स्टाफ की कमी हैं, अध्यापिकाओं के शिक्षण कार्य का प्रधानाध्यापिका द्वारा मानवीय दृष्टिकोण से पर्यवेक्षण होता हैं, विद्यालय में कम्प्यूटर शिक्षण की व्यवस्था नहीं हैं, विद्यालय में साहित्यिक व सांस्कृतिक कार्यक्रमों पर पर्याप्त ध्यान नहीं दिया जाता हैं, विद्यालय में अभिभावक–अध्यापक संघ की बैठक नियमित रूप से होती हैं, कक्षा–कक्षों की पर्याप्त व्यवस्था हैं।

प्रताप, मोहन(2007) ने ***''प्राथमिक शिक्षा के उन्नयन के लिये किये जा रहे गैर–सरकारी प्रयासों का अध्ययन''*** विषय पर डॉ. भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय, आगरा में पीएच.डी. स्तरीय शोधकार्य किया।

इस शोध के उद्देश्यों के अन्तर्गत शोधार्थी ने प्राथमिक शिक्षा के उन्न्यन हेतु किये जा रहे सरकारी व गैरसरकारी प्रयासों के अन्तर्गत सरकार द्वारा शिक्षा के विकास हेतु निर्मित नीतियाँ व गैर–सरकारी प्रयास के अध्ययन को आधार बनाया। शोध विधि के रूप में सर्वेक्षण विधि एवं उपकरण के रूप में प्रश्नावली एवं साक्षात्कार अनुसूची का प्रयोग गया। निष्कर्ष रूप में यह पाया गया कि सरकार द्वारा मद का एक बड़ा भाग शिक्षा पर खर्च करने के बावजूद प्राथमिक शिक्षा की स्थिति सन्तोषजनक नही है। तथा एन.जी.ओ. के अन्तर्गत (एयरटेल) जैसे एन. जी.ओ. द्वारा उल्लेखनीय कार्य किया जा रहा है।

ओडेदरा, हिना (2007) ने ***''राजकोट जिले में संचालित जीवनशाला का केस अध्ययन''***.विषय पर मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर से शोधकार्य किया।

इस शोध के प्रमुख उद्देश्यों में जीवनशाला की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का अध्ययन करना,जीवनशाला की भौतिक स्थिति को जानना, जीवनशाला का प्रबंध, प्रशासन

संबंधी अध्ययन करना, जीवनशाला की शैक्षिक, सह–शैक्षिक एवं व्यावसायिक गतिविधियों का अध्ययन करना, जीवनशाला के अध्यापकों एवं छात्रों की बुनियादी शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति जानना। शोध विधि के रूप में केस अध्ययन विधि एवं उपकरण के रूप में प्रश्नावली एवं साक्षात्कार अनुसूची एवं अवलोकन प्रपत्र का प्रयोग किया गया। शोध निष्कर्ष में पाया गया कि जीवनशाला विद्यालयों के पास पर्याप्त मात्रा में भौतिक संसाधन भूमि, गौशालाएँ, भवन, कक्ष एवं उपकरण उपलब्ध है, जीवनशाला का प्रशासन प्रधानाचार्य द्वारा किया जाता है जो सभी के सहयोग से प्रशासनिक दायित्वों का निर्वाह करता है, जीवनशाला में शैक्षिक, सहशैक्षिक एवं व्यावसायिक गति विधियों पर पर्याप्त ध्यान दिया जाता है तथा उनकी बराबर व्यवस्था की जातीी है।

James, Mark (2003).***"Evaluating rural Primary education development programmes in low income countries : A comparative study of the nature and process of evaluatory activities and their role in improving quality".*** Ph. D. research at University of Bristol.

इस शोध के उद्देश्यों के अन्तर्गत शोधार्थी ने कम आमदनी वाले देशों में गरीब ग्रामीण बच्चों के लिए प्राथमिक शिक्षा के विकास की गति विधियों की प्रकृति व प्रक्रिया और शिक्षा की गुणवत्ता बढ़ाने में प्रायोजक की भूमिका को जानना। शोध विधि के रूप में तुलनात्मक केस अध्ययन एवं उपकरण के रूप में अवलोकन, अर्द्ध संरचित साक्षात्कार अनुसूची का प्रयोग किया गया। शोध निष्कर्ष में यह पाया गया कि स्कूलों में विकासशील कार्यक्रम वास्तविक रूप में तभी संभव है जब गुणात्मक विकास जो कि मूल्यांकन गतिविधियों के विकास द्वारा संभव है, इस कार्यक्रम को अध्यापक के व्यावसायिकरण के रूप में अपनाकर विद्यालय प्रबंधन द्वारा भी इसे अपनाया जाने का सुझाव दिया है।

खियाणी, बेला (1998) ने*"गुरु मित्र योजना : वैयक्तिक वृत्त अध्ययन".* विषय पर मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर से शोध कार्य किया।

इस शोध के प्रमुख उद्देश्यों में गुरु मित्र योजना में अध्यापनरत् शिक्षकों, प्रधानाचार्यों का शैक्षिक व व्यावसायिक स्तर ज्ञात करना, विद्यालय की भौतिक सुविधाएँ ज्ञात करना, गुरु मित्र योजना से सम्बन्धित मुख्य शैक्षणिक गतिविधियों का अध्ययन करना था। शोध विधि के रूप में वैयक्तिक वृत अध्ययन विधि एवं उपकरण के रूप में प्रश्नावली एवं साक्षात्कार अनुसूची का प्रयोग किया गया। निष्कर्ष में पाया गया कि इस योजना से विद्यालय के नामांकन में वृद्धि हुई है। जन समुदाय शिक्षा के प्रति सक्रिय हुआ है। कहानी, कविता, अभिनय से अध्यापन कार्य करवाने से बालक अधिगम में रुचि लेते हैं।

शर्मा, स्मृति(1995) ने*"नवोदय विद्यालय में संगठनात्मक वातावरण का अध्ययन"*.विषय पर मोहन लाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर से शोधकार्य किया।

इस शोध के प्रमुख उद्देश्यों में नवोदय विद्यालयों के वर्तमान संगठनात्मक (प्रशासनिक, भौतिक, शैक्षिक एवं सहशैक्षिक) वातावरण का अध्ययन करना, नवोदय विद्यालयों के संगठनात्मक वातावरण का तुलनात्मक अध्ययन करना, नवोदय विद्यालयों में उपयुक्त संगठनात्मक वातावरण बनाने के लिए सुझाव देना। शोध विधि के रूप में सर्वेक्षण विधि एवं उपकरण के रूप में अभिलेखों का अध्ययन, साक्षात्कार अनुसूची, प्रश्नावली एवं अवलोकन–प्रपत्र का प्रयोग गया। शोध निष्कर्ष में पाया गया कि नवोदय विद्यालयों में भौतिक वातावरण ठीक है, विद्यालय संबंधी नीतियों के निर्माण में अध्यापकों की राय ली जाती है, विद्यालयों में शैक्षिक वातावरण अच्छा है, नवोदय विद्यालयों के प्राचार्य सहशैक्षिक प्रवृत्तियों से संतुष्ट है, नवोदय विद्यालयों में अध्यापकों का मनोबल उच्च पाया गया।

Susan, Coral Hay (1991).***"The Singa Girls School: A Case Study in Educational Development".*** Cornell University, Africa.

इस शोध का उद्देश्य विद्यालय की योजना, प्रशासनिक, वित्तीय, पाठ्यक्रम, स्टॉफ तथा विद्यालय सम्पर्क व्यवस्था का विश्लेषणात्मक अध्ययन करना था। शोध विधि के रूप में सर्वेक्षण एवं वैयक्तिक अध्ययन विधि तथा उपकरण साक्षात्कार अनुसूची, प्रश्नावली एवं अवलोकन–प्रपत्र का प्रयोग किया गया। यह शोध कार्य 1981 से 1990 तक के विद्यालय को दर्शाता है जिसमें इसके आरम्भ, निर्माण तथा पूर्ण रूप से जैरियन होना सम्मिलित है। अंतिम निष्कर्ष के रूप में विद्यालय की सफलता में 6 कारकों ने योगदान दिया है–(1) विद्यालय जैरियन युवाओं को शिक्षा प्रदान करता है, जिससे व्यावसायिक, सामाजिक तथा स्वास्थ्य क्षेत्र में योगदान प्रदान करते है। (2) यह विद्यालय जैसे कि शैक्षिक असमानता को कम करताहै। (3) यह एक संगठन हो गया है। (4) यह भविष्य की उन्नति के लिए क्षमता रखता है। (5) यह अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग का अच्छा उदाहरण है। (6) यह वैयक्तिक उन्नति का साधन है।

सरूपरिया, पुष्पा(1988) ने*"आश्रम विद्यालय का एक अध्ययन".* विषय पर मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर से शोधकार्य किया।

शोध के प्रमुख उद्देश्यों में आश्रम विद्यालय की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का अध्ययन करना, आश्रम विद्यालय प्रबंधन, प्रशासन व्यवस्था, शैक्षिक तथा सहशैक्षिक गतिविधियों का अध्ययन करना, आश्रम विद्यालयों के बालकों के सामने आने वाली विभिन्न समस्याओं का अध्ययन करना। शोध विधि के रूप में केस अध्ययन विधि एवं उपकरण के रूप में प्रश्नावली एवं साक्षात्कार अनुसूची एवं अवलोकन प्रपत्र का प्रयोग किया गया। शोध निष्कर्ष में पाया गया कि सरकार आश्रम विद्यालय को जो खर्चा देती है विभिन्नतम द्वारा नहीं देकर एक साथ दिया जाता है जिसका विद्यालय अपनी आवश्यकतानुसार खर्चा करता है, आश्रम विद्यालय में पढ़ने वाले छात्र 5 कि.मी. से 55 कि.मी. की दूरी से यहाँ आतेहै, गतवर्षों का आश्रमविद्यालयों का परीक्षा परिणाम बेहतर पाया गया है, आश्रम विद्यालय में छात्राओं को प्रवेश शैक्षिक रिकार्ड एवं साक्षात्कार से दिया जाता है, आश्रम विद्यालय में छात्रावास की दैनिक गति विधियाँ सुविधाजनक पाई गई, पुस्तकालय एवं मनोरंजन की व्यवस्था उत्तम है।

समस्या कथन

प्रस्तुत शोध का समस्या कथन इस प्रकार है– *''राजकीय विशिष्ट माध्यमिक विद्यालय : एक वैयक्तिक अध्ययन''*

शोध का औचित्य

किसी भी समस्या का औचित्य उसके परिणामों की विस्तृत क्षेत्र में सार्थकता, उच्चता एवं उपयुक्तता के आधार पर निश्चित कर सकते हैं। प्रस्तुत शोध '' राजकीय विशिष्ट माध्यमिक विद्यालय : एक वैयक्तिक अध्ययन'' का औचित्य निम्न प्रकार से हैं–

i. अनुसंधानकर्ता के दृष्टिकोण से

राज्य सरकार द्वारा इस प्रकार के विद्यालय 1957 में स्थापित किये गये हैं। शोध द्वारा यह ज्ञात किया जायेगा कि इन विद्यालयों की स्थापना के उद्देश्य क्या थे? ये विद्यालय इन उद्देश्यों की प्राप्ति में कितने सफल हुए? किस प्रकार की उपलब्धियाँ प्राप्त की? तथा शिक्षण में किन–किन नवाचारों का प्रयोग किया जाता हैं? इस दृष्टिकोण से यह शोधकार्य अनुसंधानकर्ता हेतु अत्यंत लाभकारी सिद्ध होगा।

ii. प्राचार्य के दृष्टिकोण से

संस्थान के प्राचार्य द्वारा प्रशासकीय एवं प्रबंधकीय व्यवस्था की देखरेख की जाती है, अतः इस शोध अध्ययन द्वारा प्रशासनिक दृष्टि से योजना एवं नीतियाँ क्रियान्वयन में आने में वाली समस्याओं को ज्ञात कर उनके समाधान हेतु सुझाव प्रस्तुत किए जाएंगे।

iii. शिक्षकों के दृष्टिकोण से

इस शोध अध्ययन द्वारा अध्यापको के शिक्षण में आने वाली समस्याओं का ज्ञात किया जा सकेगा, फलस्वरूप शिक्षण कार्य को प्रभावी बनाने तथा समस्याओं के समाधान हेतु सुझाव प्रस्तुत किए जाएंगे।

iv. विद्यार्थियों के दृष्टिकोण से

आज का विद्यार्थी ही कल के देश का कर्णधार होगा। अतः उसके सर्वांगीण विकास हेतु विशिष्ट विद्यालय की आवश्यकता है। अतः शोध द्वारा इस प्रकार के विद्यालय की विशेषताओं को ज्ञात कर अन्य विद्यालयों को भी इन विशेषताओं से अवगत करवाया जायेगा, इससे अन्य विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों को भी इससे लाभान्वित किया जा सकेगा।

v. शैक्षिक दृष्टिकोण से

इस शोध अध्ययन द्वारा विद्यालय के उद्देश्य, योजनाओं एवं नीतियों के अध्ययन द्वारा विशिष्ट विशेषताओं को ज्ञात किया जायेगा एवं उनके आधार पर अन्य विद्यालयों को लाभान्वित करने हेतु सुझाव प्रेषित किए जाएंगे।

शोध के उद्देश्य

प्रस्तुत शोध समस्या के निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किए गए हैं–

1. विद्यालय की विशिष्ट पृष्ठभूमि का अध्ययन करना।
2. विद्यालय के भौतिक एवं मानवीय संसाधनों का पता लगाना ।
3. विद्यालय की शैक्षिक,सह–शैक्षिक गतिविधियों तथा पाठ्यक्रम का अध्ययन करना।
4. विद्यालय की प्रबन्ध व प्रशासन व्यवस्था का अध्ययन करना।
5. विद्यालय द्वारा शिक्षा को गुणात्मक बनाने हेतु नवाचारों/प्रयोगों का पता लगाना ।

अध्ययन क्षेत्र का परिसीमन

प्रस्तुत समस्या का अध्ययन समय एवं साधनों को दृष्टि में रखते हुए उदयपुर शहर में स्थित राजकीय विशिष्ट माध्यमिक विद्यालय तक सीमित रखा गया हैं।

शोध विधि

प्रस्तुत शोध में ''राजकीय विशिष्ट माध्यमिक विद्यालय, उदयपुर'' के गहन अध्ययन करने हेतु वैयक्तिक अध्ययन विधि का चयन किया गया है।

शोध न्यादर्श

शोधकर्ता द्वारा शोधकार्य को पूर्ण करने के लिए प्रयोजनामूलक न्यादर्श प्रतिचयन के द्वारा उदयपुर शहर में स्थित राजकीय विशिष्ट माध्यमिक विद्यालय का चयन किया गया। शोधकर्ता द्वारा प्रस्तुत अध्ययन में यादृच्छिक प्रतिचयन विधि के द्वारा विद्यालय के अध्यापकों एवं उद्देश्यपूर्ण प्रतिचयन विधि के द्वारा जिला शिक्षा अधिकारी(माध्यमिक), प्रधानाध्यापक, विद्यार्थियों (प्राथमिक स्तर तथा उच्च प्रा. एवं माध्यमिक स्तर) का चयन किया गया। जिसका विवरण निम्नानुसार है–

क्र.सं.	विवरण		संख्या
1.	जिला शिक्षा अधिकारी(माध्यमिक)		01
2.	विद्यालय के प्राचार्य		01
3.	विद्यालय के अध्यापक		10
4.	विद्यालय के विद्यार्थी	प्राथमिक स्तर	30
		उच्च प्रा. एवं माध्यमिक स्तर	30
कुल योग			**72**

शोध उपकरण

प्रस्तुत शोधकार्य की नवीनता एवं विशिष्टता को ध्यान में रखते हुए शोध के आंकड़ों को एकत्रित करने हेतु उपकरणों का निर्माण किया गया, जो निम्नलिखित प्रकार से हैं– स्वनिर्मित उपकरणों का निर्माण किया गया, जो निम्नलिखित प्रकार से हैं–

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-4*(Part-2) December- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

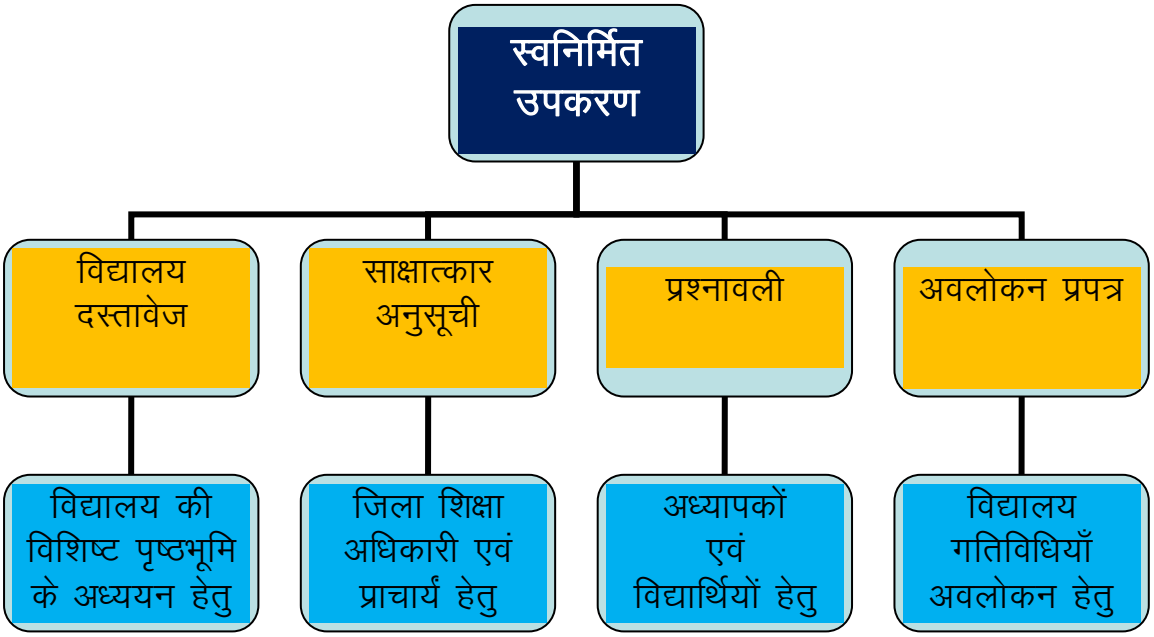

शोध से प्राप्त निष्कर्ष

शोधकर्ता ने स्वनिर्मित उपकरणों साक्षात्कार अनुसूची, प्रश्नावली एवं अवलोकन प्रपत्र का प्रेक्षण स्वयं विशिष्ट विद्यालय में जाकर किया तथा विशिष्ट माध्यमिक विद्यालय से सम्बन्धित दस्तावेज प्राप्त किए जिनसे प्राप्त दत्तों का संकलन व विश्लेषण किया गया तत्पश्चात् शोधकर्ता ने इस आधार पर निष्कर्ष प्राप्त किए जो इस प्रकार हैं–

दस्तावेजों के आधार पर निष्कर्ष

राजकीय विशिष्ट माध्यमिक विद्यालय की स्थापना राजस्थान सरकार द्वारा 1957 में की गयी। यह विशिष्ट विद्यालय राजस्थान के मेवाड़ अंचल में उदयपुर शहर के मध्य में उपनिदेशक (माध्यमिक शिक्षा) कार्यालय के समीप रेजिडेन्सी परिसर में स्थित हैं। विशिष्ट विद्यालय द्वारा मॉन्टेसरी पद्धति से विद्यार्थियों को शिक्षण करवाया जाता है। विशिष्ट विद्यालय में विद्यार्थियों को नर्सरी कक्षा से ही अंग्रेजी भाषा की शिक्षा दी जाती हैं। विद्यालय में पुस्तकें एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा प्रकाशित तथा स्वयं विद्यालय द्वारा विशेष पुस्तकें (नैतिक शिक्षा, सामान्य ज्ञान, cursive writting) लगायी जाती हैं। विशिष्ट विद्यालय में निजी विद्यालयों की तरह दो वेशभूषा (सोम, मंगल, गुरू, शुक्र : नीला सलवार एवं कुर्त्ता तथा बुध, शनि : सफेद सलवार एवं कुर्त्ता) का प्रावधान हैं। विशिष्ट विद्यालय में सरकार द्वारा विद्यार्थियों का विशिष्ट शिक्षण प्रक्रियाँ द्वारा सर्वांगीण विकास कर उन्हें निजी विद्यालयों से बेहतर शिक्षा देने का प्रयास किया जाता है।

राजकीय विशिष्ट माध्यमिक विद्यालय के मानवीय संसाधन सम्बन्धी निष्कर्ष

विशिष्ट विद्यालय में माध्यमिक स्तर के अनुसार कर्मचारीयों की संख्या पर्याप्त हैं। एक प्रधानाध्यापक, छः वरिष्ठ अध्यापक, ग्यारह सहायक अध्यापक कार्यरत हैं, जो विद्यालय के स्तर एवं विद्यार्थियों की संख्या के अनुकूल हैं। साथ ही एक यू.डी.सी., एक एल.डी.सी., एक पुस्तकालय प्रभारी तथा चार चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी कार्यरत हैं। केवल शारीरिक शिक्षक का पद रिक्त हैं, जो इसी सत्र में हुआ हैं। प्रधानाध्यापक एवं अध्यापक सभी उच्च शैक्षणिक योग्यताधारी एवं प्रशिक्षित है। विद्यालय में पूर्व प्राथमिक कक्षाओं को पढाने हेतु नर्सरी प्रशिक्षण प्राप्त अध्यापिकाओं का अभाव पाया गया।

राजकीय विशिष्ट माध्यमिक विद्यालय के परीक्षा परीणाम सम्बन्धी निष्कर्ष

राजकीय विशिष्ट माध्यमिक विद्यालय के विगत पाँच वर्षों (2010, 2011, 2012, 2013, 2014) के परीक्षा परिणाम का विश्लेषण करने के बाद निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि विद्यालय की सभी कक्षाओं (नर्सरी से नवम् तक) का परीक्षा परिणाम उच्च कोटी का रहा है। विगत पाँच वर्षों के परिणामों के अनुसार सभी कक्षाओं का परीणाम शत् प्रतिशत रहा है। परीक्षा परिणाम के आधार पर कहा जा सकता है कि विशिष्ट विद्यालय का शैक्षिक वातावरण अति उच्च स्तर का है। जो कि विद्यालय की उच्च स्तरीय शैक्षिक स्थिति एवं प्रगति का परिचायक है।

साक्षात्कार के आधार पर निष्कर्ष

जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक) से साक्षात्कार के आधार पर निष्कर्ष

उदयपुर जिले में राज्य सरकार द्वारा दो विशिष्ट विद्यालय स्थापित किये गए हैं। विशिष्ट विद्यालय की स्थापना के उद्देश्य विद्यार्थियों को मॉन्टेसरी पद्धति से शिक्षण, नर्सरी कक्षा से ही विद्यार्थियों को विद्यालय में प्रवेश एवं अंग्रेजी भाषा का शिक्षण, निजी विद्यालयों से बेहतर शिक्षण करवाते हुए शिक्षा की गुणवत्ता को बढाना प्रमुख है। विशिष्ट विद्यालय को इन उद्देश्यों की प्राप्ति पूर्ण रूप से हो रही है। विशिष्ट विद्यालय को विशेष प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षक, सर्वसुविधायुक्त विद्यालय भवन, सुसज्जित पुस्तकालय पुस्तकों, पत्र–पत्रिकाओं से परिपूर्ण, बच्चों के खेलने हेतु मैदान, पूर्व प्राथमिक बच्चों के लिए विशेष झूले, फिसलन पट्टी, बगीचा जैसे मानवीय एवं भौतिक संसाधन उपलब्ध करवाये जा रहे है। एनसीएफ–2005 के बाद से विद्यालय का पाठ्यक्रम पूर्ण

रूप से एन,सी,ई,आर,टी द्वारा तैयार किया जाता है। विशिष्ट विद्यालयों के द्वारा शिक्षा में गुणात्मकता प्राप्त करने हेतु विद्यार्थियों को चार्ट, मॉडल, समूह चर्चा, कम्प्यूटर, प्रोजक्टर जैसे विशेष नवाचार प्रयुक्त किए जाते है। जिला शिक्षा अधिकारी द्वारा विशिष्ट विद्यालयों का समय–समय पर निरीक्षण किया जाता है। जिला शिक्षा अधिकारी के रुप में विशिष्ट विद्यालय के लिए अलग से आर्थिक स्रोतों की, विशेष प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षकों की, अध्यापकों हेतु विशिष्ट प्रशिक्षण कार्यक्रमों एवं नवाचारों की समस्याओं का सामना करना पड़ता है। विशिष्ट विद्यालयों के लिए विशेष प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षकों का चयन किया जाता है, उपलब्धता नही होने पर सामान्य प्रशिक्षित शिक्षकों का चयन किया जाता है। विशिष्ट विद्यालयों के शिक्षकों हेतु शैक्षिक प्रौद्योगिकी एवं नवाचार के प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है, यह आधुनिक एवं नई–नई शिक्षा तकनीकों एवं नवाचारों का प्रशिक्षण से सम्बन्धित होते है। विशिष्ट विद्यालयों को उच्च माध्यमिक स्तर तक क्रमोन्नत करना, विद्यालय के पाठ्यक्रम का आधुनिकीकरण करना विशिष्ट विद्यालयों से सम्बन्धित भावी योजनाएँ हैं।

प्रधानाचार्य से साक्षात्कार के आधार पर निष्कर्ष

वर्तमान प्रधानाध्यापक डॉ. चन्द्रप्रकाश पुरोहित प्रधानाध्यापक के रुप में विशिष्ट विद्यालय में मई 2013 से कार्यरत है। विद्यालय के प्रभावी संचालन हेतु प्रधानाध्यापक द्वारा विद्यालय कार्यक्रमों एवं गतिविधियों को कर्मचारियों के सहयोग एवं चर्चा से पूर्ण करते है, कर्मचारियों के साथ मित्रवत व्यवहार रखते है तथा कर्मचारीयों, विद्यार्थियों एवं अभिभावकों की समस्याओं का तत्काल समाधान करने का प्रयास करते है। विशिष्ट विद्यालय की स्थापना के उद्देश्य विद्यार्थियों को मॉन्टेसरी पद्धति से शिक्षण, नर्सरी कक्षा से ही विद्यार्थियों को विद्यालय में प्रवेश एवं अंग्रेजी भाषा का शिक्षण, निजी विद्यालयों से बेहतर शिक्षण करवाते हुए शिक्षा की गुणवत्ता को बढाना प्रमुख है। विशिष्ट विद्यालय को इन उद्देश्यों की प्राप्ति पूर्ण रूप से हो रही है। प्रधानाध्यापक को विद्यालय संचालन में आर्थिक संसाधनों की कमी, विशेष प्रशिक्षित शिक्षकों की कमी का सामना करना पड़ता है। विशिष्ट विद्यालय को सर्वसुविधायुक्त विद्यालय भवन, सुसज्जित पुस्तकों, पत्र–पत्रिकाओं से परिपूर्ण पुस्तकालय, बच्चों के खेलने हेतु मैदान, पूर्व प्राथमिक बच्चों के लिए विशेष झूले, फिसलन पट्टी, बगीचा जैसे भौतिक संसाधन उपलब्ध करवाये जा रहे है। प्रधानाध्यापक द्वारा शिक्षको को शैक्षिक प्रौद्योगिकी एवं नवाचार की जानकारी हेतु प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करते है/भेजते है। इससे शैक्षिक गुणवत्ता में वृद्धि होती है, शिक्षक विद्यार्थियों की समस्याएँ सरलता से समझ कर उनका समाधान आसानी कर पाते है एवं सभी कक्षाओं का परीक्षा परिणाम उच्च रहता हैं। विद्यार्थियों के शिक्षण हेतु शिक्षण हेतु चार्ट, मॉडल, समूह चर्चा, कम्प्यूटर, प्रोजक्टर जैसे विशेष नवाचारों/तकनीकों का प्रयोग किया जाता है। विद्यालय के पाठ्यक्रम एनसीईआरटी द्वारा निर्मित हैं, साथ ही विद्यालय द्वारा विशेष पुस्तकों (नैतिक शिक्षा, सामान्य ज्ञान, cursive writing) का चयन करके पाठ्यक्रम में सम्मिलित की जाती है। विद्यालय में प्रवेश परीक्षा द्वारा विद्यार्थियों को प्रवेश दिया जाता है। विद्यालय में विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास हेतु शिक्षण, खेलकूद, सांस्कृतिक, भ्रमण एवं विभिन्न प्रतियोगिताओं जैसे कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 लागु होने से विद्यालय में प्रवेश हेतु सभी बच्चे पात्र हो गये है तथा कक्षा आठ तक किसी भी विद्यार्थी को परीक्षा में अनुतीर्ण नही किया जाता है। विशिष्ट विद्यालय को और अधिक प्रभावी बनाने हेतु सरकार द्वारा विशिष्ट विद्यालयों को दिया जाने वाला वित्त बढाना चाहिए, विशेष प्रशिक्षित शिक्षकों की कमी को दूर करना चाहिए साथ ही भामाशाहों को अधिक से अधिक जोड़ने का प्रयास किया जा रहा है।

प्रश्नावली के आधार पर निष्कर्ष

अध्यापकों हेतु निर्मित प्रश्नावली के आधार पर निष्कर्ष

विशिष्ट विद्यालय में विद्यार्थियों को नर्सरी कक्षा से प्रवेश, मान्टेसरी पद्धति से शिक्षण, नर्सरी से अंग्रेजी भाषा शिक्षण, खेल–खेल में शिक्षा, कम्प्यूटर शिक्षा जैसी विशिष्ट विशेषताएँ पायी जाती हैं। सभी शिक्षक शिक्षा विभाग द्वारा आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भाग लेते है। तथा इससे शिक्षकों को नवीन शैक्षिक तकनीकों की जानकारी एवं विद्यार्थियों का परीक्षा परिणाम उच्च रखने में सहायता मिलती है। शिक्षक अबेकस, चार्ट, कम्प्यूटर, मॉडल, प्राजेक्टर, समूह चर्चा, केसिड जैसे नवाचारों/तकनीकों का शिक्षण में प्रयोग करते है। विशिष्ट विद्यालय में शिक्षण कार्य हेतु चार्ट, कार्डस, मॉडल, अबेकस, कविता, कहानी, केसिड, सी.डी., कम्प्यूटर जैसी शिक्षण सहायक सामग्री उपलब्ध करवायी जाती हैं। विशिष्ट विद्यालय का पाठ्यक्रम नैतिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक दृष्टिकोण को विकसित करने वाला, बालकों का सर्वांगीण विकास करने वाला तथा राष्ट्रप्रेम की भावना जाग्रत करने जैसी विशेषताओं से ओत–प्रोत है। एनसीएफ–2005 से विशिष्ट विद्यालय में पाठ्यक्रम पूर्ण रूप से एनसीईआरटी द्वारा निर्मित लागू किया गया है। शिक्षक शैक्षिक एवं सहशैक्षिक गतिविधियों में प्रेरक प्रसंग, सामान्य ज्ञान, विभिन्न प्रतियोगिताओं, सांस्कृतिक कार्यक्रम, समूहचर्चा एवं मस्तिष्क उद्वेलन पद्धति जैसे नवाचारों का प्रयोग करते है। विशिष्ट शिक्षा में रैली आयोजन, खेल, देशभक्ति गीत, नैतिक एवं सामाजिक गुणों का विकास, भाईचारे एवं बन्धुता की भावना, देशप्रेम एवं सामाजिक कार्यो में सहभगिता द्वारा बालकों को समाज एवं राष्ट्र सेवा हेतु प्रेरित किया जाता है। शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 से विशिष्ट विद्यालय में परीक्षा परिणाम ग्रेडिंग सिस्टम से तैयार किया जाने लगा है तथा कक्षा आठ तक किसी भी विद्यार्थी को अनुतीर्ण किया जाता है।

शिक्षकों को विशिष्ट विद्यालय में नवाचार शिक्षण सहायक सामग्री की कमी, शैक्षिक व सहशैक्षिक गतिविधियों में तालमेल, प्रत्येक बच्चे के पारिवारीक संबंधों को जानकार बच्चे को शिक्षा के लिए प्रेरित करना जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। विशिष्ट विद्यालय में विशेष प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षकों एवं शारीरिक शिक्षक की कमी को दूर करके, विद्यालय को उच्च माध्यमिक स्तर

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-4*(Part-2) December- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

तक क्रमोन्नत करके तथा एक कक्षा में अधिक से अधिक 20 विद्यार्थियों को ही प्रवेश द्वारा और अधिक प्रभावी बनाया जा सकता है। विशिष्ट विद्यालय में वित्तीय कमी को दूर करने हेतु अधिक से अधिक भामाशाहों को विद्यालय से जोड़ा जाना चाहिए।

विद्यार्थियों हेतु निर्मित प्रश्नावली के आधार पर निष्कर्ष

सारणी सं.–1

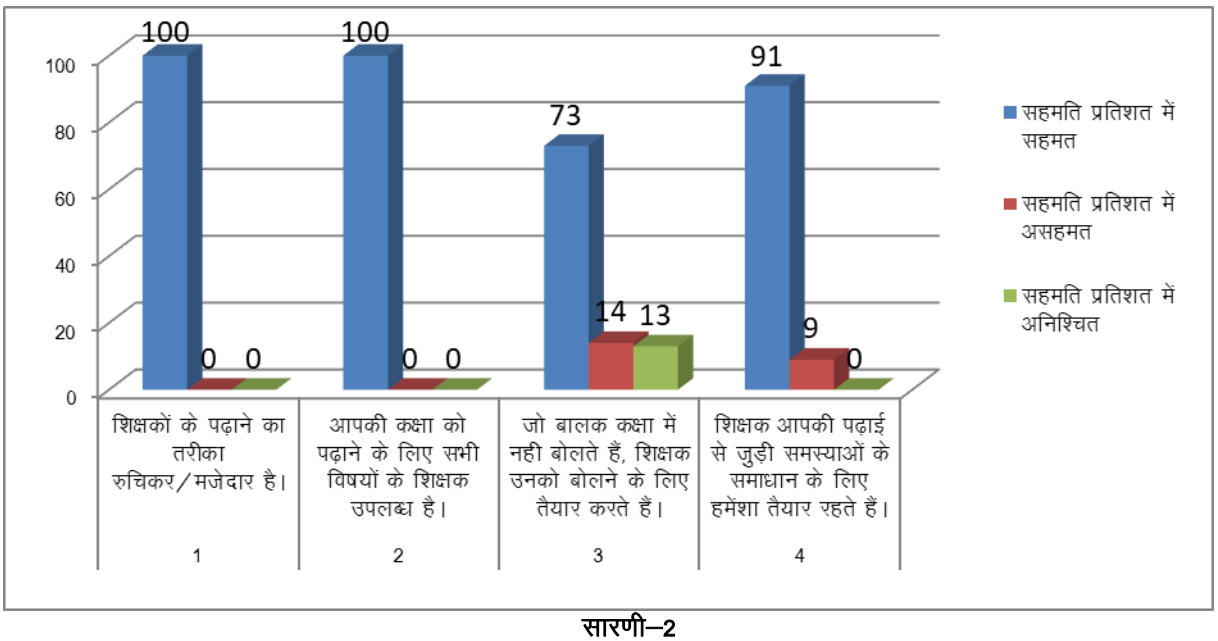

सारणी–2

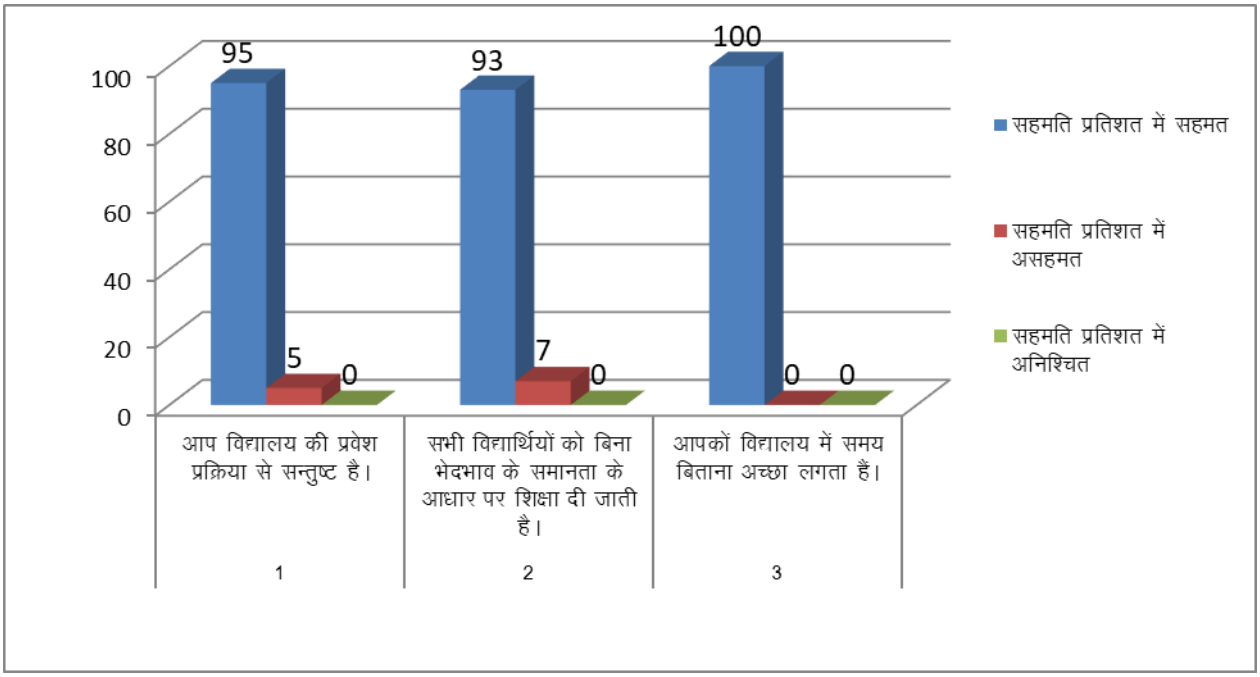

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-4*(Part-2) December- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

सारणी सं.–3

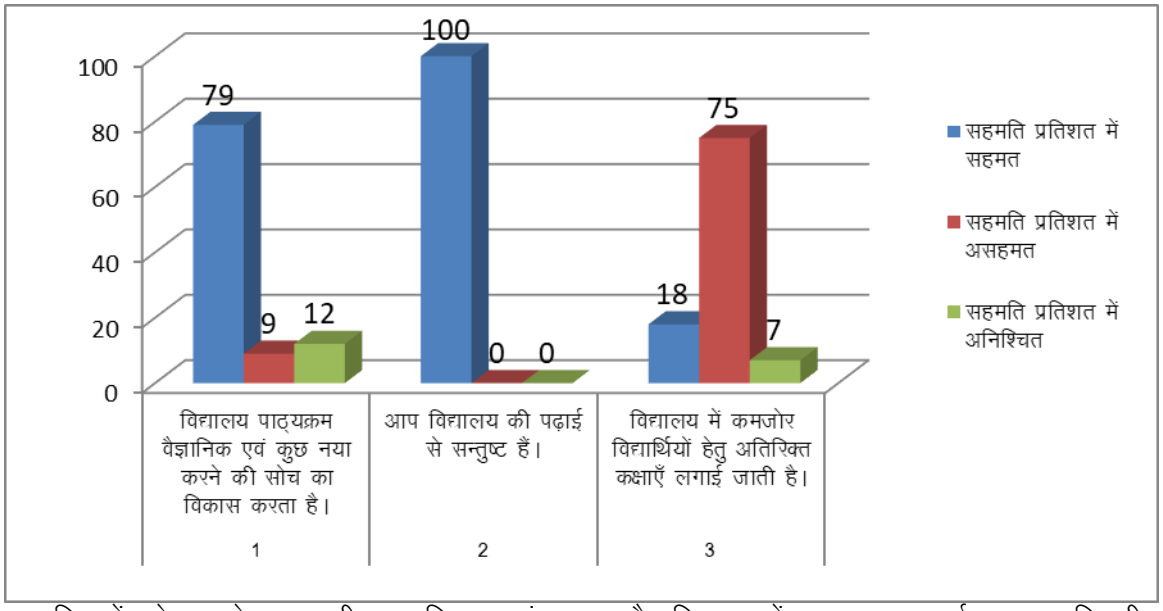

शिक्षकों के पढ़ाने का तरीका रुचिकर एवं मजेदार है। विद्यालय में माध्यमिक स्तर के अनुसार पर्याप्त अध्यापकों की व्यवस्था है। विद्यार्थी विद्यालय की पढ़ाई से सन्तुष्ट है। संकोची विद्यार्थियों को शिक्षकों द्वारा बोलने हेतु प्रोत्साहित किया जाता है। शिक्षकों द्वारा श्यामपट्ट के अतिरिक्त अन्य शिक्षण सहायक सामग्री का उपयोग कम किया जाता है। शिक्षक विद्यार्थियों की पढ़ाई से जुड़ी समस्याओं के समाधान के लिए हमेंशा तैयार रहते हैं। विद्यालय का पाठ्यक्रम वैज्ञानिक एवं कुछ नया करने की सोच का विकास करता है। विद्यार्थी विद्यालय की प्रवेश प्रक्रिया से सन्तुष्ट है। विद्यालय में सभी विद्यार्थियों को बिना भेदभाव के समानता के आधार पर शिक्षा दी जाती है। प्रधानाध्यापक विद्यार्थियों की समस्याओं के समाधान हेतु सामान्य रूप से तैयार रहते है। शिक्षकों द्वारा विद्यार्थियों को खेलकूद एवं सांस्कृतिक गतिविधियों के लिए प्रोत्साहित किया जाता हैं। विद्यालय में पर्याप्त कक्षा कक्ष की व्यवस्था है। प्रत्येक कक्षा में फर्नीचर की पर्याप्त व्यवस्था है। प्रधानाध्यापक द्वारा कक्षाओं का निरीक्षण बहुत कम किया जाता है। विद्यालय द्वारा आवश्यक पुस्तकें पुस्तकालय में उपलब्ध करवाई जाती है। विद्यालय की खेलकूद एवं सांस्कृतिक गतिविधियों से विद्यार्थियों की पढ़ने में रुचि उत्पन्न होती हैं। विद्यार्थियों को विद्यालय में समय बिताना अच्छा लगता हैं। विद्यालय में कमजोर विद्यार्थियों हेतु अतिरिक्त कक्षाएँ बहुत कम मात्रा में लगाई जाती है। विद्यालय द्वारा अभिभावकों की समस्याओं का समाधान किया जाता हैं। अभिभावक विद्यालय द्वारा आयोजित बैठक में अधिकाशंतः उपस्थित रहते हैं।

अवलोकन प्रपत्र के आधार पर निष्कर्ष

भौतिक संसाधन सम्बन्धी निष्कर्ष

राजकीय विशिष्ट माध्यमिक विद्यालय का स्थान बहुत ही अच्छा, एकान्त एवम् शान्तिदायक है। विशिष्ट विद्यालय के भवन की स्थिति उच्च स्तरीय है। भौतिक संसाधन की दृष्टि से विद्यालय में पर्याप्त साधन सुविधायें हैं। विशिष्ट विद्यालय सभी भौतिक व्यवस्थाओं से परिपूर्ण है। विद्यालय में कक्षा–कक्ष, कार्यालय कक्ष, बिजली, जल, पर्यावरण, सुरक्षा, खेल आदि की सम्पूर्ण व्यवस्था उपलब्ध है।

मानवीय संसाधन सम्बन्धी निष्कर्ष

विशिष्ट विद्यालय में वर्तमान समय में 18 अध्यापक/अध्यापिकाएँ नियुक्त हैं। जो एस.टी.सी., स्नातक, स्नात्तककोत्तर, बी.एड. एवं एम. एड. जैसी उच्चतम शैक्षिक योग्यता रखते हैं। विद्यालय में सभी विषयों के विषयाध्यापक हैं। विद्यालय में एक प्रधानाध्यापक, छः वरिष्ठ अध्यापक, ग्यारह तृतीय श्रेणी अध्यापक, एक पुस्तकालय प्रभारी, एक–एक यू.डी.सी एवं एल.डी.सी. नियुक्त है।

विद्यालय में संचालित गतिविधियों सम्बन्धी निष्कर्ष

विद्यालय में पूर्व प्राथमिक, प्राथमिक, उच्च प्राथमिक एवं माध्यमिक कक्षाओं की शिक्षा प्रदान की जाती है। विद्यालय में प्रतिदिन प्रातःकाल प्रार्थना सभा का आयोजन किया जाता है। जिसमें सरस्वती वन्दना, प्रतिज्ञा, देशभक्ति गीत, सुविचार, राष्ट्र गीत एवं राष्ट्र गान गाये जाते हैं। विद्यालय में अध्ययन के अलावा साहित्यिक, सांस्कृतिक एवं खेल प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता है। विद्यालय में विद्यार्थियों को समय–समय पर ऐतिहासिक एवं मनोरंजक स्थानों के भ्रमण पर ले जाया जाता हैं।

विशिष्ट विद्यालय में सुविधाएँ

राजकीय विशिष्ट माध्यमिक विद्यालय, उदयपुर में विद्यार्थियों को खेल, मनोरंजन, झूले, पुस्तकालय, पीने को ठण्डा जल, शौचालय, कम्प्यूटर जैसी समस्त आधुनिक सुविधाएँ दी जाती है। विद्यालय में विद्यार्थियों को पाठ्य सामग्री, पोषाहार एवं खेल सामग्री निःशुल्क प्रदान की जाती है।

विशिष्ट विद्यालय में नवाचार

विशिष्ट विद्यालय में मान्टेसरी पद्धति से शिक्षण, चार्ट, मॉडल, केसिड, सी.डी., अबेकस, कम्प्यूटर,

समूह–चर्चा, सिरेमिक चार्ट जैसे नवाचारों का प्रयोग किया जाता है।

विशिष्ट विद्यालय में कक्षा कक्ष, खेल मैदान व प्रयोगशाला

विशिष्ट विद्यालय में माध्यमिक स्तर के अनुसार पर्याप्त कक्षा कक्ष है। सभी कक्ष हवादार, पंखे एव रोशनी युक्त है। विद्यालय भवन के मध्य में तथा बाहर की ओर विद्यार्थियों के खेलने हेतु पर्याप्त खेल का मैदान है, जहाँ बच्चें बैडमिण्टन, वॉलीबाल, कब्बड्डी, एथलेटिक्स एवं खो–खो जैसे खेल खेलते है। विद्यालय में विज्ञान कक्ष, प्रयोगशाला कक्ष, भाषा कक्ष, चित्रकला कक्ष की अलग से व्यवस्था नही हैं।

विशिष्ट विद्यालय में शिक्षक–विद्यार्थी सम्बन्ध

विशिष्ट विद्यालय में शिक्षक एवं विद्यार्थियों के सम्बन्ध मधुर है। दोनो ही अपने कर्त्तव्य को पालन तल्लीनता से करते है। विशिष्ट विद्यालय में शिक्षक विद्यार्थियों को करके सीखने पर बल देते है। विद्यार्थी निडर होकर शिक्षकों के समक्ष अपनी समस्याओं को रखते है और शिक्षक भी उनकी जिज्ञासाओं का रूचि लेकर समाधान करते है। विद्यार्थी शिक्षक को अपना आदर्श समझते है तथा उनके प्रति समपर्ण की भावना रखते है। शिक्षक विद्यार्थियों को व्यक्तिगत रूप से उनके मानसिक, सामाजिक, शारीरिक, पारीवारिक स्थिति को जानकर शिक्षण प्रदान करते है। शिक्षक विद्यार्थियों पर विचारों को लादते नही है तथा उनमें विभिन्न क्रियाकलापों द्वारा रचनात्मक प्रवृत्तियों का विकास करते है।

विशिष्ट विद्यालय में अनुशासन

विशिष्ट विद्यालय में अनुशासन बनायें रखने का मुख्य दायित्व प्रधानाध्यापक का है। शिक्षक एवं विद्यार्थी स्वानुशासन का पालन करते है, जिससे विद्यालय में नियमों एवं नीतियों को लागू करने में कठिनाई नही आती है। विद्यालय में दण्ड का प्रावधान नही है। विद्यार्थियों द्वारा अनुशासन का पालने नही करने पर शिक्षकों एवं प्रधानाध्यापक द्वारा उन्हें दण्डित नही करके शिक्षण तथा जीवन में अनुशासन का महत्व बतलाया जाता है, जिससे वे स्वयं स्वानुशासन के लिए प्रेरित होते हैं।

विशिष्ट विद्यालय की प्रबन्ध एवं प्रशासनिक व्यवस्था

विशिष्ट विद्यालय की प्रबन्ध एवं प्रशासनिक व्यवस्था का मुख्य केन्द्र प्रधानाध्यापक है। विशिष्ट विद्यालय के प्रबन्धन से सम्बन्धित सभी निर्णय लेने का अधिकार प्रधानाध्यापक को ही है। प्रबन्धकीय व्यवस्था में प्रधानाध्यापक तानाशाही का रूप न रखकर अध्यापकों के सहयोग से लोकतान्त्रिक प्रक्रियाँ से विशिष्ट विद्यालय से सम्बन्धित निर्णय लेता है। प्रबन्धन एवं प्रशासन व्यवस्था को सुचारू बनाने हेतु प्रधानाध्यापक द्वारा विद्यालय में अध्यापक–अभिभावक परिषद् का गठन किया गया है। परिषद् द्वारा विद्यालय की समस्याओं, नियमों, नीतियों और विशिष्ट विद्यालय को प्रगति के पथ पर आगे ले जाने हेतु चर्चा एवं प्रयास किये जाते है। विशिष्ट विद्यालय को वित्तीय समस्या का सामना करना पड़ता है। प्रबन्धन द्वारा विशिष्ट विद्यालय की वित्तीय समस्या के समाधान हेतु विशिष्ट विद्यालय भामाशाहों को जोड़ने को प्रयास किया जा रहा है।

समग्र निष्कर्ष

शोधकर्ता द्वारा राजकीय विशिष्ट माध्यमिक विद्यालय की वास्तविक स्थिति जानने हेतु विद्यालय की विशिष्ट पृष्ठभूमि, उद्देश्य, उद्देश्यों की प्राप्ति में सफलता, शैक्षिक नवाचारों का प्रयोग, पाठ्यक्रम, शिक्षा का अधिकार अधिनियम का विद्यालय पर प्रभाव, अध्यापकों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम, विद्यालय की प्रबंध व्यवस्था तथा सुविधाएँ, विद्यालय की समयावधि, पाठ्यचर्या, गुणवत्ता इत्यादि की सही, स्पष्ट एवं वास्तविक जानकारी प्राप्त करने हेतु जिला शिक्षा अधिकारी(माध्यमिक) व प्रधानाध्यापक से साक्षात्कार लिया, साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी की वास्तविकता हेतु विद्यालय में कार्यरत अध्यापकों से, विद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों से तथा विद्यालय का समय–समय पर जाकर अवलोकन किया जिससे विशिष्ट विद्यालय की वास्तविक स्थिति की जानकारी प्राप्त हुई।

राजकीय विशिष्ट माध्यमिक विद्यालय के अवलोकन के पश्चात् तथा पूर्ण जानकारी के पश्चात् शोधकर्ता को आभास हुआ कि राजकीय विशिष्ट माध्यमिक विद्यालय अपनी विशिष्ट गुणवत्ता लिए हुए है, यह अन्य सरकारी विद्यालयों से बिल्कुल अलग है। चूंकि अन्य सरकारी विद्यालयों में इस प्रकार की शिक्षा एवं व्यवस्था देखने को नहीं मिलती है, विशिष्ट विद्यालय में विद्यार्थियों की संतुष्टि गुणवत्ता को दर्शाती है तथा विशिष्ट विद्यालय में कार्यरत अध्यापकों की उच्चतम योग्यता भी विशिष्ट विद्यालय की गुणवत्ता को प्रकट करती है। विशिष्ट विद्यालय में प्रतियोगिताओं का आयोजन करना तथा इससे विद्यार्थियों में आए परिवर्तन को प्रस्तुत करना विशिष्ट विद्यालय का एक अत्यन्त रोमांचक कार्य है। विशिष्ट विद्यालय में पिछले पाँच वर्षों से लगातार सभी कक्षाओं का शत् प्रतिशत परीक्षा परीणाम प्राप्त करना भी विशिष्ट विद्यालय की उच्च उपलब्धि को दर्शाता है। जो विशिष्ट विद्यालय के प्राचार्य एवं अध्यापकों की योग्यता को प्रकट करता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

Best, J.W. (1963). Research in Education. New Delhi: Prentice Hall of India.

Best, J.W. & Kahz J.V. (2012). Research in Education. (10th ed.). New Delhi: Prentice Hall Of India Learning Private Limited.

Garrett, H.E.(1967). Statistics in Psychology and Education. New Delhi: Longmary Uren and Co.

Good, C.V.(1959). Introduction of Educational Research. (2nd ed.). New York: Appleton Century Crafts Ins.

Kumar, K.L. (2001). Educational Technolgy. Agra: New Age International (P) Ltd. Publishers.

Sharma, R.A.(1986).Fundamentals of Education Research. Meerut: Loyal Book Depot.

Vockel, E.L. (1983). Educational Research. New York: McMillan Pub. Co. Inc.

ढौंढियाल, एस.एन.; फाटक, ए.बी. (1972). शैक्षिक अनुसंधान का विधिशास्त्र. जयपुर : राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी।

गुप्ता, एस.पी. (2003). सांख्यिकीय विधियाँ. इलाहाबाद : शारदा पुस्तक भवन।

कौल, लोकेश (1998). शैक्षिक अनुसंधान की कार्यप्रणाली. दिल्ली : विकास पब्लिशिंग हाउस।

भटनागर, आर.पी.; भटनागर, ए.बी. (1995). शिक्षा अनुसंधान. मेरठ : लॉयल बुक डिपो।

मुखर्जी, रविन्द्रनाथ (2001). सामाजिक शोध एवं सांख्यिकी. नई दिल्ली : विवेक प्रकाशन।

ओड़, एल. के.; वर्मा, जे.पी. (1990). शैक्षिक प्रशासन. जयपुर : राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी।

पाण्डेय, के.पी. (2005). शैक्षिक अनुसंधान. आगरा : विश्वविद्यालय प्रकाशन।

श्रीवास्तव, डी.एन. (2000). अनुसंधान विधियाँ. आगरा : साहित्य प्रकाशन।

Webliography

www.dissertation.com
www.wikipedia.com
www.172.16.0.11/sunet.htm
www.aiaer.net
www.ssrn.com
www.shodhganga.com
www.shodh.net
www.pdfdrive.net
www.trainingshare.com